मौर्य साम्राज्य के प्रमुख शासक: चन्द्रगुप्त मौर्य, बिन्दुसार और अशोक

भाग:-2

डॉ विभूति भूषण

सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

प्राचीन इतिहास विभाग

SNSRKS COLLEGE SAHARSA

चन्द्रगुप्त मौर्य का विजय एवं युद्ध

चंद्रगुप्त मौर्य ने विभिन्न क्षेत्रों में विजय की. प्लूटार्क लिखता है की उसने 6 लाख की सेना द्वारा समस्त भारत को रौंद डाला. जस्टिन कहता है की पश्चिमोत्तर में सिकंदर द्वारा विजित क्षेत्र उसके नेतृत्व में पुनः स्वतंत्र हो गये. सिकन्दर ने भारत छोड़ने से पूर्व सिंध विद्रोह को देखते हुए पश्चिमोत्तर भारत की प्रशसनिक व्यवस्था को चार भागों में (आम्भि, पोरस, फिलिप, पिथोन) विभाजित किया था.

फिलिप 2 की हत्या होते ही पुरे क्षेत्र में अराजकता फ़ैल गई. इसका लाभ उठाकर चन्द्रगुप्त ने पुरे क्षेत्र में राष्ट्रीय युद्ध छेड़ दिया तथा सिंध और पंजाब पर अधिकार कर लिया. अपने द्वितीय चरण में कश्मीर के प्रवर्तक नामक राजा की सहायता से नन्दवंश के अंतिम शासक धनानंद को पराजित कर उसने मगध पर अधिकार कर लिया. उसने सेल्यूकस (सिकन्दर का उत्तराधिकारी) को भी हराया.

सेल्यूकस से चन्द्रगुप्त मौर्य का युद्ध (305 BC) – सिकन्दर की मृत्यु के बाद सेल्यूकस उसके उत्तराधिकारी के रूप में शासक बना. उसने बैक्ट्रिया को जीतते हुए भारत पर भी 305 BC में आक्रमण कर दिया लेकिन चन्द्रगुप्त ने उसे पराजित कर दिया. इसकी चर्चा एप्पिथानस ने की है. दोनों के बीच महत्वपूर्ण संधि हुई जिसमे निम्न बाते शामिल थी.

1. सेल्यूकस ने चन्द्रगुप्त को सिंधु पार के चार क्षेत्र प्रदान किये. एरिया (वर्तमान हेरात), जेड्रोशिया (बलूचिस्तान), अराकेशिया (गांधार), पेरोपमिसदाई (काबुल)
2. चन्द्रगुप्त ने सेल्यूकस को 500 हाथी उपहार में दिए.
3. एक ग्रीक राजकुमारी हेलिना का विवाह चन्द्रगुप्त के साथ हुआ.
4. संधि के तहत मेगास्थनीज को पाटलिपुत्र दरबार में भेजा गया.
5. चंद्रगुप्त एक उदारवादी शासक था उसकी राजनीतिक व प्रशासनिक नीतियां प्रजाहितैषी थी. धार्मिक मामलों में वह काफी उदार था.